RESEARCH PAPER

RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
e-ISSN: 2455-3085 | Vol.06 | Iss.09 | September 2021 | pp. 174-178
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

विश्व पटल पर हिंदी भाषा : चुनौतियाँ और विस्तार

डा0 वन्दना शर्मा

एसोसियेट प्रोफेसर–हिन्दी विभाग, मुलतानीमल मोदी कॉलेज, मोदीनगर (गाजियाबाद)–201204

Abstract

हिंदी भाषा शताब्दियों से हमारे चिर संचित शान, अद्भुत मेधा एवं हमारी प्रणम्य संस्कृति की वाहक रही है। हिंदी हमारे देश की संस्कृति एवं विज्ञानं के उत्थान में अभूतपूर्व योगदान है। हिंदी का उद्देश्य इसी तथ्य से प्रतिलक्षित होता है कि हमारी हिंदी संस्कार के प्रति उदार, लचीली, वैज्ञानिक लिपि के कारण अब विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर ह। हिंदी भाषी प्रवासी नागरिकों की संख्या करोंड़ों में है। वर्तमान आंकड़ों के अनुसार 180 देशो के 200 विश्व विद्यालयों में हिंदी का अध्ययन अध्यापन हो रहा है।

एक अरब लोग हिंदी बोल व समझ रहे है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का वर्चस्व बढ़ रहा है।

हिंदी की उपबोलियाँ ही लगभग 300 है। हिंदी भारतीयता की वाहक है। विश्व में हिंदी का प्रचार–प्रसार किस–किस प्रकार सुदृढ़ हुआ है यह सब अब तथ्यपरक हो चुका है।

Keywords: *आंतरिक एवं बाह्य चुनौतियाँ, मौलिक अनुदित पुस्तकें, योजनाबद्ध कार्यशालाए, मीडिया का वैश्विकरण संचार ओर प्रवासी भारतीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का वर्चस्व, हिंदी की चुनौतियाँ, हिंदी की वैज्ञानिकता व ग्राहयता*

Article Publication

Published Online: 15-Sep-2021

***Author's Correspondence**

डा0 वन्दना शर्मा

एसोसियेट प्रोफेसर–हिन्दी विभाग, मुलतानीमल मोदी कॉलेज, मोदीनगर (गाजियाबाद)–201204

vandanasharma911969@gmail.com

10.31305/rrijm.2021.v06.i09.029

© 2021The Authors. Published by RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

यदि भाषा न रही होती तो वर्तमान में जिस प्रकार मनुष्य की चतुर्दिक प्रगति, हम देख रहे हैं शायद उसका अस्तित्व ही न होता। भाषा हमारे व्यवहार, नातों–रिश्तों, निजी भावनाओं एवम् सामाजिक कार्यकलापों को सहज बनती है। भारतीय संदर्भ में हिंदी भारतीय संस्कृति की विरासत, सांस्कृतिक चेतना के विस्तार भारत की अभिव्यक्ति और देशज ज्ञान को अंकित करने, संजोने और व्यापक रूप से प्रसारित करने का कार्य दायित्व, सदियों से वहन करती आ रही है। हिंदी मात्र भाषा नहीं संस्कार भी है। शताब्दियों से हिंदी का संस्कार होता रहा है। हिंदी के लचीलेपन, उदारवादी स्वभाव, वैज्ञानिक देवनागरी लिपि के कारण भारत अथवा भारत के बाहर विश्व पटल पर बोली और समझी जाती है। हिंदी विश्व की तीन प्रधान भाषाओं में अपना स्थान रखती है। हिंदी का लक्ष्य सिर्फ राजभाषा या राष्ट्रभाषा होना नहीं है। हिंदी का लक्ष्य विश्वभाषा और संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा सूची में शामिल होना भी है। हिंदी के विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ते विस्तार और शीघ्र व्यापकता के कारण हिंदी सयुंक्त राष्ट्र संघ की भाषा सूची में स्थान पाने की प्रथम अधिकारिणी है।

हिंदी भारत की एक महत्त्वपूर्ण भाषा है जिसका एक चिर समृद्धशील और सर्जनात्मक साहित्य है। हिंदी एक व्यापक समुदाय के लिए प्राणनाड़ी सरीखी है। भाषाओं का अपना एक भौगोलिक विस्तार भी होता ही है। हिंदी संसार में एक मात्र ऐसी भाषा है, जिसमें 46 बोलियाँ जीवन हैं। अर्थात् हिंदी बोली बहुल भाषा है। समय की धारा के साथ हिंदी भाषा के क्षेत्र का विस्तार होता ही गया। वर्तमान में हिंदी अखिल भारतीय सर्वदेशीय भाषा भी है। हिंदी भाषा बोलने समझने वालों में प्रवासी नागरिकों की संख्या भी प्रचुर है। वर्तमान हिंदी के वैश्विक परिदृश्य के संदर्भ में देखें तो हिंदी 160 देशों में 1 अरब से भी अधिक लोगों द्वारा बोली, समझी, और प्रयोग में लाई जाती है। विश्व के लगभग 200 विश्वविद्यालयों और संस्थाओं में हिंदी का अध्ययन अध्यापन हो रहा है जहां हिंदी शिक्षण और अनुसंधान संबंधी कार्य किए जा रहे हैं। यह गौरव की बात है। भारत के साथ अन्य शार्क देशों में भी हिंदी सामाजिक–सांस्कृतिक प्रेरणा प्रदान

करती है। फीजी, मॉरीशस, गुयाना, टोबेगो एवं त्रिनिदाद,सूरीनाम, दक्षिण अफ्रीका आदि देशो ं मे ं हिंदी समाज और सं स्कृति के अंग एवं सम्पर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है। तुर्की, मंगोलिया, दक्षिण कोरिया, जापान, चीन, इंग्लैंड, फ्रांस, रूस, कनाडा, अमेरिका, एवं अन्य देशों में हिंदी भाषा में अध्ययन अध्यापन हो रहा है साथ ही इन देशों में हिंदी व्यापार और रोजगार के लिए गए भारतीयों द्वारा प्रयोग की जाती ळें

वर्तमान में हिंदी अनेक सं दर्भो ं में प्रयुक्त हो रही है। यथाय साहित्य सर्जन, सं स्कृति, अखबार, पत्र–पत्रिका, वाणिज्य, तकनीक, अंतर्जाल, जनसंचार, सिनेमा, सोशल मीडिया, विज्ञान, आदि। इस प्रकार वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा के विशाल और विस्तृत संदर्भों, सैकड़ों देशों में प्रयुक्त होने और वैज्ञानिक लिपि होने के कारण ही हिंदी भाषा स्वतः ही विश्व भाषा बन जाती है। परंतु संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा में सम्मलित होने में हिंदी के सामने अनेक चुनौतियाँ सतत् रही हैं। जिनमें मुख्यतः आर्थिक समस्या, हिंदी की वर्तनी के मानकीकरण, बाजारवाद, मानक अनुवाद की समस्या, मध्यम वर्ग का अंग्रेजी के प्रति अंधा रुझान, हिंदी को खड़ी बोली मानने की भूल, संस्कृतनिष्ठ कठिन हिंदी का प्रयोग, हिंदी की बोलियों के भी स्वतंत्र अस्तित्व की मांग करते हुए हिंदी हितों का विस्मरण, जातीयता का बढ़ता घेरा, शिक्षण पद्धति का विकास न होना, रोमन लिपि में हिंदी का लिखा जाना आदि। जब तक हम इन चुनौतियाँ का विश्लेषण समाधान नहीं करें गे तब तक हिंदी के आगे संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनने मे कठिनाइयां भी आती रहेंगी।

बेशक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का वर्चस्व बढ़ रहा है किंतु तब भी हिंदी के भोगौलिक विस्तार और वैश्विकता पर समयानुसार नई दृष्टियों से विचार करने की आवश्यकता है। विश्व पटल पर हिंदी भाषा की स्थिति को समझने के लिए हिंदी भाषियो ं को निम्नांकित दो वगों ं में बाँट सकते हैं। प्रथम वर्ग में हिंदी भाषा का वह स्वरूप है जो भारत में ही प्रयुक्त होती है। इसको हम निम्नलिखित तीन वर्गों में बाँट सकते हैं।

a) वह हिंदी जिसको संस्कृतनिष्ठ, परिमार्जित अथवा खड़ीबोली का विकसित रूप कहा जाता ळें
b) हिंदी भाषी प्रदेशो ं में बोली जाने वाली बोलियाँ और उपबोलियाँ। जिनमें उपबोलियों की संख्या 300 सौ से ऊपर चली जाती है। जो कि एक भाषा की बडी उपलब्धि मानी जानी चाहिए।
c) अहिंदी भाषी प्रदेशों में बोली जानी वाली हिंदी यथाय दक्षिणी भारत, उत्तर–पूर्वी भारत, द्वीप समूह आदि। अहिंदी भाषा–भाषी प्रदेशो ं में भी हिं दी समझने वालों की संख्या अन्य भाषाओं को बोलने वालों की तुलना में बहुत ज्यादा है। हिंदी भाषा क्षेत्रीयता की भावना से ऊपर उठकर पूरे देश से जुड़ती रही है। अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह में अनेक अहिंदी भाषी प्रान्तों को लाँघती हुई हिंदी विभिन्न भाषा भाषियों के बीच संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग की जाती है। राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, वर्धा की शाखा व अन्याय समूहों से भी हिंदी के प्रचार प्रसार में तीव्रता आयी है। द्वितीय वर्ग में हिंदी भाषा का वह स्वरूप है जो विदेशों में बोली और समझी जाती है। हिंदी के इस रूप को तीन वर्गो में विभाजित कर इसके वैश्विक संदर्भ को अवश्य समझा जा सकता है।
d) ऐसे देश जहां हमारे भारतीय मूल के लोग दो–ढाई सौ वर्षों पहले गिरमिटिया मजदूर के रूप में गए और वहीं बस गए। इन भारतीयों की भाषा में भोजपुरी, अवधी प्रमुख थी। ऐसे देशों में फीजी, मॉरीशस, सूरीनाम, टोबेगो एवं त्रिनिदाद, गुयाना आदि प्रमुख हैं। इन भारतीयों ने ही अपनी अस्मिता और सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखने के लिए हिंदी भाषा को जीवित यथाशक्ति रखा है। इन देशों में हिंदी को 'फीजी बात' या फीजी हिंदी, क्रियोल हिंदी, नेटाली हिंदी, सरनामी हिंदी, भोजपुरिया हिंदी आदि नाम से भी जाना जाता है।

फीजी द्वीप समूह में बसे हुए भारतीय मूल के लोगों द्वारा फीजी हिंदी या फीजी बात बोली और समझी जाती है। ''फीजी हिंदी बोलने वाले फीजी में 313,798, आस्ट्रेलिया में 27,542, न्यूजीलैंड 27882, अमेरिका 24315, कनाडा 22770, टोंगा में 310, लोग बसे हुए हैं। फीजी में तो साहित्य लेखन की परंपरा भी रही है। जिनमे प्रोव्म रेमंड पिल्लई कृ त 'अधूरा सपना' प्रोव्म सुब्रमणि की 'डाउका पुराण' विशेष उल्लेखनीय मानी जाती है। वर्तमान में बोलचाल के रूप में फीजी हिंदी का एवम् और सार्वजनिक रूप में परिनिष्ठित हिंदी का प्रयोग फीजी हिंदी को लुप्त होने के कगार पर ले जा रहा है। हिंदी को अंग्रेजी और डच जैसी सत्ता की भाषा डसती जा रही है। यह तथ्य किंचित निराशजनक तो है ही।

मॉरीशस में 1834 में भारतीय मूल के लोग पहुंचे थे। इनकी भाषा मुख्यतः पूर्वी उत्तर प्रदेश, और पश्चिमी बिहार की भाषा थी। आज भी यहाँ की भाषा भोजपुरी और अवधी बोली की शब्दावली युक्त मिश्रित भाषा है। हिंदी साहित्य यहाँ

अत्यधिक मात्र में लिखा गया है। साहित्य लेखन में श्री अभिमन्यु अनंत, कमला प्रसाद मिश्र, डॉ० जीतनराइन आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। मॉरीशस की हिन्दी प्रचारिणी सभा ने हीरेक महोत्सव के अवसर पर 'काव्य परिचय' शीर्षक पुस्तक का प्रकाशन किया जिसमें सूर्यप्रसाद भगत, जयरूप दोसिया, सोमदत्त बखौरी, हरीनारायण सीता, मुनीश्वर लाल चिंतामणि, आदि की रचनाएँ संकलित है। श्री अभिमन्यु अनत को भारतीय साहित्य अकादमी ने सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित किया है। महात्मा गांधी संस्थान में उच्च स्तर तक हिंदी का अध्ययन–अध्यापन किया जा रहा है। मॉरीशस में स्थापित 'विश्व हिंदी सचिवालय' हिंदी भाषा को विश्व भाषा बनाने के प्रति पूरी तरह समर्पित है। 'विश्व हिंदी पत्रिका' जिसने हिंदी को नए आयामों तक पहुंचाया वह भी यहीं से प्रकाशित होती है। 1909 से लेकर अब तक सैकड़ों पत्र पत्रिकाएँ मॉरीशस से प्रकाशित हो रही हैं।

सूरीनाम जोकि दक्षिण अमेरिका का छोटा सा देश है। भारतीय पूर्वज 1873 में सूरीनाम पहुंचे थे। सरनामी हिंदी सूरीनाम के अलावा हालैंड में भी बोली जाती है। इसमें भोजपुरी–डच मिश्रित हिंदी का प्रयोग होता हैं। सरनामी साहित्यकारों में अमर सिंह रमण, प्रेमानन्द आदि नाम उल्लेखनीय हैं। सरनामी देवनागरी लिपि के साथ रोमन में भी लिखी जा रही है। सरनामी में पत्र–पत्रिकाएँ और साहित्य लिखा जा रहा है।

कैरिबियन देशों में गुयाना, त्रिनिदाद और टोबागो, सेंट लुशिया द्वीप, ग्रेनाडा द्वीप, सेंट विनसेट आदि जगहों पर हिंदी बोली जाती है। वर्तमान में गुयाना विश्वविद्याल, जार्ज टाउन में हिंदी, भारतीय संस्कृति और दर्शन का अध्ययन–अध्यापन किया जा रहा है। यहाँ हिंदी क्रियोली भाषा में मिश्रित हो गई है। ''भाषा और व्याकरण पक्ष के विश्लेषण से बोध होता है कि गुयाना के पश्चिम इलाकों में (एस्सेकिबो, मेमुनपइव, और डिमेरारा) हिंदी लुप्त हो गयी है।

त्रिनिदाद एवं टोबागों में अधिकतर 'अफ्रीकी क्रियोल' रहते हैं। यहां क्रियोल मिश्रित हिंदी भाषा बोलने वाले लाखों लोग रहते हैं। सर्वेक्षण के अनुसार ''यहाँ हिंदी, अंग्रेजी में आत्मसात हो गयी है। कुछ लोग त्रिनिदाद हिंदी को 'क्रियोल हिंदुस्तानी भी कहते हैं। इन द्वीपों में हिंदी को बढ़ावा देने में पत्र–पत्रिकाओं का अति विशेष योगदान रहा है। त्रिनिदाद एवं टोबेगो में हिंदी निधि संस्था भारतीय दूतावास के साथ मिलकर पत्रिका भी निकालती है। ''बोलिज नगर के प्रवासी भारतीयों के विषय में भारतीय मूल के डॉव्ं ब्रींसहले समारू ने शोध भी किया है। इन सभी भारतीय मूल के लोगों का हिंदी से संबंध कई पीढ़ियों से आत्मीय और घनिष्ठ था परंतु फिलहाल वर्तमान में यहाँ हिंदी भाषा लुप्तप्राय हो रही है। वैसे उत्तरी बोलिज में प्रवासी भारतीय संग्रहालय भी स्थापित है।

द्वितीय वर्ग में भारत के पड़ोसी देश पाकिस्तान, नेपाल, अफगानिस्तान, श्रीलंका, भूटान, बांग्लादेश आदि आते हैं। ये एक ही भाषा–परिवार के बोलने वाले देश हैं। इन देशो में हिंदी को समझने में कोई कठनाई नही होती है। यहाँ के लोग व्यापार, शिक्षा, तकनीक में हिंदी का प्रयोग करते हैं। ये लोग हिंदी फिल्मों और गीतों में रुचि रखते है। इस प्रकार हिंदी बोलने और समझने वालों की संख्या करोड़ों हो जाती है जिससे हिंदी को विश्व भाषा बनाने में प्रतिनिधित्व बढ़ जाता है।

तृतीय वर्ग में एशिया, अफ्रीका, यूरोप तथा अमेरिका महाद्वीपों के लगभग 160 देशों में शिक्षण, रोजगार या किसी अन्य प्रयोजन के लिए गए भारतीय आते हैं । इन देशों में विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण की सुचारू व्यवस्था है। यहाँ के गैर–हिंदी भाषी लोग हिंदी के माध्यम से भारतीय दर्शन, समाज, संस्कृति, को जानना समझने में लगी हैं। इन देशों में भारतीय मूल के लोगों ने अपनी सामाजिक–सांस्कृतिक अस्मिता और धार्मिक कार्यकलापों के लिए हिंदी भाषा का प्रचुरू प्रयोग किया। इन देशों में पत्रकारिता, रेडियो, दूरदर्शन के माध्यम से हिंदी निरंतर ऊंचाई के शिखर को छू रही है। आज इन देशों के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण–प्रशिक्षण, हिंदी भाषा और साहित्य में शोध कार्य भी किया जा रहा है।

डेनमार्क में हिंदी 'स्टुडियो स्कोले' नामक प्रतिष्ठित लैंगवेज स्कूल के हिंदी विभाग में पढ़ाई जाती है। क्रोएशिया दक्षिण स्लाविक भाषा क्षेत्र के तौल जाना है। क्रोएशिया में हिंदी भाषा का अध्ययन जाग्रेब विश्वविद्यालय, भारत विज्ञान विभाग के अंतर्गत किया जाता है। यहाँ हिंदी को रोमन लिपि में लिखा जाता है। इओसिफ ओरन्स्की ने मध्य एशिया में ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान में पार्या भाषा की खोज की थी। पार्या भाषा को भारतीय आर्य भाषाओं की केंद्रीय

उपशाखाओं के अंतर्गत ही रखा गया है। डॉ॰ भोलानाथ तिवारी इन लोगों को ''हरियाणा, पंजाब प्रांत से निकले हुए मानते हैं और इनकी भाषा का संबंध पश्चिमी हिंदी वर्ग से जोड़ते हैं। वर्तमान में इनकी संख्या तीन हजार के आस–पास बताई जाती है।

हिंदी भाषा के अध्ययन–विश्लेषण में विदेशियों की भूमिका–सर्वप्रथम हिंदी के अध्ययन विश्लेषण का प्रारम्भ विदेशी विद्वानों के द्वारा ही किया गया है। जान जोशुआ केढलर की 1618 में लिखित 'हिंदुस्तानी भाषा' नामक पुस्तक, 1773 में जान फर्गुसन ने लंदन से 'हिंदी भाषा का व्याकरण' प्रकाशित किया। सर्वप्रथम फ्लोरेंस विश्वविद्यालय के स्नातक श्रीयुत लुईजि पिओतेसीतोरी ने सन 1911 में 'इल रामचरित मानस ए इल रामायण' विषय पर शोध लेख लिखा, 1918 में श्री जे. एन. कारपेन्टर ने लन्दन विश्वविद्यालय में 'दि थियोलॉजी ऑफ तुलसीदास' विषय पर शोध प्रबंध लिखा। अँग्रेजी–हिंदी के प्रामाणिक शब्दकोश के निर्माण के संदर्भ में फादर कामिल बुल्के का नाम भी अग्रणीय है। रिचर्ड मार्क, अमेरिका 1966, ने 'राष्ट्रभाषा हिंदीः नगरों के शिक्षित लोगों की भाषा', पीव्॰ एव्॰ चेर्नीशेव, रूस 1972, ने 'साहित्यक हिंदी भाषा और बोलियाँ', और निदरलैंड के युगो कैम्पबैल, मिज्मेगेन यूनिवर्सिटी 1978, ने 'एक बहुभाषी समाज में राजभाषा के स्वीकार्य रूप की खोज' (हिंदी के प्रसंग में), पर पी–एचव्॰ डीव्॰ शोध कार्य किया। इस प्रकार भारत के बाहर 17वीं, 18वीं, 19वीं, 20वीं सदी में हिंदी पर महत्त्वपूर्ण कार्य हुए हैं जिनसे हिंदी भाषा समृद्ध होती आयी है। चेक के डॉ. ओदोलेन स्मेकल एवं शारदा यादव ने "चेक और मोराविया में प्रचलित 27 लोककथाओं का संकलन एवं हिन्दी अनुवाद किया है। " हिंदी को विश्व मंच पर स्थापित करने एवं नए रूप में विकसित करने में हिंदी सिनेमा का बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। हिंदी सिनेमा ने भाषा और संस्कृति का भी यथासम्भव विस्तार किया है। 1995 में टी. वी. चौनलों के माध्यम से प्रसारित कार्यक्रमों से हिन्दी भाषा की लोक प्रियता में बहुत वृद्धि हुई है। वर्तमान में डिस्कवरी, नेशनल ज्योग्राफी एवं अन्य टी. वी. चौनल से प्रसारित होने वाले दैनिक धारावाहिकों की प्रथम संख्या हिन्दी भाषा में ही है। अनेक विदेशी विद्वानों ने हिंदी शिक्षण के लिए हिंदी गानों तक को माध्यम बनाया है। जापान के प्रोव्॰ टोमियो मिजोकामी ने लगभग 300 फिल्मी हिंदी गानों का जापानी भाषा में अनुवाद किया है। प्रो. तोमियो मिजोकामि एवं श्री गिरीश बख्शी ने "101 जापानी गीतों का हिन्दी में अनुवाद किया है। इन गीतों को हिंदुस्तानी संगीत की स्वर लिपि में भी प्रस्तुत किया गया है।"

पत्र–पत्रिकाओं ने भी हिंदी जगत को समृद्ध किया है। हिंदी प्रकाशन जगत का निरंतर विकास हो रहा है। देश–विदेश से 500 से अधिक पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है। ''नेशनल रीडरशिप सर्वे की रिपोर्ट के अनुसार भारत में दस सबसे ज्यादा बिकने वाले समाचार पत्रों में पाँच हिंदी में प्रकाशित होते हैं। "ई–पुस्तक क्रांति ने हिंदी साहित्य की पहुँच को विश्व में सर्व सुलभ बना दिया है। आज प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक संचार माध्यमों के साथ विज्ञापन जगत हिंदी को नए आयाम प्रदान कर रहा है। हिंदी की वैश्विक स्थिति में काफी फर्क आया है। कंप्यूटर साधित भाषा शिक्षण के अंतर्गत केंद्रीय हिन्दी संस्थान ने तकनीकी विभाग और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली के सहयोग से गुरु नामक पैकेज निर्मित किया, जिसके अंतर्गत 2 प्रकार के प्रारूप आते है। एक शिक्षक मॉडल और प्रशिक्षणार्थी मॉडल। छात्र इन सब के माध्यम से वार्तालाप, शब्दावली एवं लिपि भी सीख सकते है।

पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश तथा बिलगेट्स आदि भी हिंदी शिक्षण तथा उसके कंप्यूटरीकृत स्वरूप के महत्त्व को स्वीकार कर चुके हैं। हिन्दी के बढ़ते कदमों की आहट पाते ही अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने 'राष्ट्रीय सुरक्षा भाषा कार्यक्रम' के अंतर्गत अपने देशवाशियों को हिन्दी, अरबी, चीनी और रूसी भाषाएँ सीखने के लिए प्रेरित करते हुए कहा था "हिन्दी ऐसी विदेशी भाषा है, जिसे इक्कीसवीं सदी में राष्ट्रीय सुरक्षा और समृद्धि के लिए अमेरिका के नागरिकों को सीखना चाहिए। यह हिंदी के तकनीकी विकास का स्वर्ण काल है। सोशल मीडिया ने तो हिंदी में पाठकों की कमी का सबसे बड़ा मिथक तोड़ा है। ऑनलाइन पुस्तक बाजार, ईमेल, ब्लोगिंग, फेसबुक, के माध्यम से हिंदी का विस्तार हुआ है। यूनिकोड मे हिंदी टाइपिंग, रूपान्तरण ने तो हिंदी के विस्तार में क्रांति ही ला दी है। तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्था, मीडिया के वर्चस्व, वैश्वीकरण और उदारीकरण ने हिंदी के विकास में बेहद अहम भूमिका निभायी है। भारतीय संदर्भ में हिंदी के विकास में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा का कार्य अति महत्त्वपूर्ण है जिसने 'वर्धा हिंदी शब्द कोश', 'समाज विज्ञान विश्व कोश', हिंदी समय डॉट कॉम, विदेशी छात्रों के लिए हिंदी शिक्षण की व्यवस्था, मानक शोध पत्रिकाओं का प्रकाशन, हिंदी सॉफ्टवेयर आदि विकसित करके वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा को सुदृढ़ किया।

हिंदी के सम्मुख कुछ आंतरिक एवं बाह्य चुनौतियाँ भी हैं। सबसे प्रमुख समस्या है आर्थिक समस्या। इसमें संयुक्त राष्ट्र संघ का भाषा समर्थन व्यय, तकनीकी और भाषा वैज्ञानिक संबंधी अनुसन्धानों पर होने वाला व्यय इत्यादि शामिल है। इसका समाधान सरकारी अनुदान एवम् परस्पर सहयोग के माध्यम से हो सकता है। यूँ मानक अनुवाद की समस्या भी आज हिंदी की विकट समस्या है। हिंदी को विदेशी और देशी भाषाओं के बीच सेतु के तौर पर काम करने के लिए, अनुवाद का बेहतर होना आवश्यक है। तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दावली आयोग प्रायः अंग्रेजी को आधार मानकर हिंदी शब्दों का निर्माण करता है। भारत की विभिन्न भाषाओं और लोक बोलियों में मौलिक, व्यंजक और सार्थक शब्द हैं, वहाँ से मानक शब्दावली निर्मित की जा सकती है। पिचहत्तर प्रतिशत भारतीय अंग्रेजी नही जानते हैं, सभी संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग करते हैं। इसलिए हमे हिंदी में विज्ञान, प्रबंध, वाणिज्य, तकनीक आदि में मौलिक और अनुदित पुस्तकें लानी होंगी। विशाल भारतीय मध्यम वर्ग, हिंदी भाषा के प्रति विमुख और अँग्रेजी भाषा के प्रति आकर्षित हो रहा हैं। बाजारवाद के प्रभाव, उदारीकरण के कारण हिंदी अखबार हिंदी में अंग्रेजी के शब्दों के प्रयोग को बढ़ावा दे रहे हैं जिसके कारण इसके मानक स्वरूप पर अत्यंत नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। प्रसिद्ध आलोचक नामवर सिंह का कथन हैं ''संविधान की मोहताज नहीं हैं हिंदी..... हिंदी की लड़ाई केवल भाषा की लड़ाई नहीं बल्कि अपनी पहचान की लड़ाई है, हिंदी आज उपेक्षा, उपहास की वस्तु हो गई है। आज हिंदी अंग्रेजी के मिश्रण से नई हिंदी का जन्म हुआ है। हिंग्रेजी का। हिंदी भाषा का रोमन में लिखा जाना तो एक बड़ी चुनौती है ही। जिससे निपटने के लिए योजनाबद्ध रूप से कार्यशालाएं लगायी जाएं। हिंदी शिक्षण–प्रशिक्षण पद्धति का कोई मानक पाठ्यक्रम नहीं बनाया गया है। वास्तव में हिंदी बाहरी समस्याओं से नहीं आंतरिक समस्याओं से जूझ रही है।

हिंदी विश्व में करोड़ों की मातृभाषा परस्पर अनुराग एवं संस्कृति की वाहक की भाषा है। हिंदी अनेकानेक रूपों में विश्वभर में बोली जाती है। अभिव्यक्ति के सामर्थ्य के संदर्भ में हिंदी न केवल साहित्य और संस्कृति अपितु लोकतन्त्र, समाजवाद, राष्ट्रवाद और अंतरराष्ट्रीयवाद की राजनीतिक वैचारिकी के बहस को भी अपने में समाहित कर लेने में सक्षम है। हिन्दी भारतीय संस्कृति अर्थात् भारतीयता की धरोहर एवं प्राण वायु है। हिन्दी भाषा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को जीवित रखते हुए उनको अपने अंदर काफी मात्रा में समावेश किए हुए है। हिन्दी के माध्यम से राज्यों की सांस्कृतिक एकता को सर्वाधिक योगदान मिला है। इन राज्यों के बीच हिन्दी सांस्कृतिक परंपरा को विकसित करने के साथ साथ भारतीय भाषाओं में सेतु का कार्य भी कर रही है। विश्व में हिंदी का प्रचार प्रसार, विदेशी विद्वानों के अध्ययन अध्यापन और प्रवासी भारतीयों के प्रयास से सुदृढ़ हुआ है। उसे वृहत् नए आयाम मिले हैं। प्रवासी लेखकों की रचनाएँ भी भारतीय विश्वविद्यालयों में प्रवासी हिंदी लेखन के रूप में रखी जाने लगी हैं। हिंदी हमारे समाज की पहचान और गौरव की वाहिका बने, इसके विकास और सम्यक प्रसार के लिए हमें स्वयं प्रयास करना होगा। भारत की यही भाषाई एकरूपता उसे वाणिज्य, विज्ञान, तकनीक, जनसंचार आदि क्षेत्रों में विश्व में प्रथम स्थान पर ला सकती है। विश्व पटल पर और राष्ट्रीय मंच पर हिंदी भाषा का प्रयोग नितांत हो चला आवश्यक है। तभी वह सयुंक्त राष्ट्रसंघ की भाषा का आवश्यक दर्जा पा सकेगी।

संदर्भ

1. वर्मा, विमलेशकांति, फीजीबातः हिन्दी की एक विदेशी शैली, बहुवचन, अंक–46, जुलाई–सितम्बर 2015, पृ0 9, म0 ग0 अ0 हि0 वि0 वर्धा।
2. गौतम मोहन कांत, करिबियन देशों में हिन्दी भाषा और समाज, बहुवचन, अंक–46, जुलाई–सितम्बर 2015, पृ0 30
3. Lucas J- A- "The Presence of East Indians in Belize" In The Reporter- Belize. 2009.
4. तिवारी, भोलानाथ, हिन्दी भाषा का अंतरर्राष्ट्रीय संदर्भ, पाडुलिपी प्रकाशन, 2009 पृ0 69–78.
5. स्मेकल, डॉ0 ओदोलेन (संकलन) एवं शारदा यादव (अनुवादक), चाँद का सितारा, स्टार पब्लिकेशंज प्रा0 लि0, नई दिल्ली, 1984
6. जैन, प्रो0 महावीर सरन, भाषा, जुलाई–अक्टूबर, अंक 262, वर्ष, 2015, पृष्ठ–20.
7. घोष, सुनीता रानी, हिन्दी भाषा का वर्तमान परिदृश्य, गवेषणा, अंक–105, 2015 पृ0 59.
8. सिंह, प्रो0 नामवर, वागर्थ, दिसम्बर 2006, पृ0 135.